B.A. I Part   क्रमशः (1)   डॉ० अनुराधा कुमारी
Hindi Hons   5/12/20   (हिंदी विभाग)
सूरदास –   राजा० कृ० म० कॉ०, गया

शब्दों में – "जन्म प्रमाणों के अभावों में ऐसी जनश्रुतियों की ऐतिहासिक प्रामाणिकता में सन्देह की संभावना बनी रहती है। सूरदास ने 'साहित्य लहरी' जो अन्तिम पद लिखा है, वह उनके जीवनी से सम्बन्ध रखता है।"

'प्रथम ही प्रभु जागते, प्रगट अद्भुत रूप' – आलोचना कर सूर का नाम भी आता है। ~~उनके छः भाई थे जो युद्ध में मारे गये थे। सूरदास अंधे थे।~~ इसमें सूरदास को चंद का वंशज माना है। उनके छः भाई थे जो युद्ध में मारे गये थे। सूरदास अंधे थे। कुएँ में गिरने पर कृष्ण द्वारा निकाले गये थे। जब कृष्ण ने वर माँगने को कहा तो उत्तर दिया – "आपको छोड़कर मैं किसी को न देखूँ।" श्रीकृष्ण ने स्वयं अस्तु कहकर यह बतला दिया कि दक्षिण के ब्राह्मण से शत्रु का नाश होगा। वे मेरा नाम सूरदास या सूरश्याम रखकर अन्तर्धान हो गये। मैंने फिर ब्रजवास की इच्छा जाहिर की और गोसाईं विट्ठलनाथ ने अपने अष्टछाप में मेरी स्थापना की। मैं जगातकुल का ब्राह्मण हूँ और व्यर्थ होते हुए भी नन्दवंश का मोल लिया हुआ गुलाम हूँ।

'भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो' वाली सूरदास की एक अन्य कविता के आधार पर इनके अंधे होने का प्रमाण मिलता है, क्योंकि उस कविता में तीन 'द्विविध अंधेरो' शब्द का व्यवहार किया गया है। इससे यह तो स्पष्ट है कि ये मृत्यु के समय अंधे हो गये थे।

अबतक इनके जन्मस्थान के सम्बन्ध में निम्नलिखित पाँच स्थानों की चर्चा आती है – मथुरा प्रांत का कोई गाँव, रुनकता, गोपाचल, सिही (बल्लभगढ़), सिही (आगरा)। इसमें सिही और रुनकता सम्बन्धित मत सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। द्वारिका प्रसाद और प्रभुदयाल मित्तल सूर का जन्म स्थान सिही मानते हैं। अपने मत के समर्थन में 'भाव-प्रकाश' का उद्धरण देते हैं। अष्टछाप के अनुसार 'दिल्ली के पास चार कोस दूरे में एक सिही ग्राम है।' डॉ० दीनदयाल गुप्त और हरवंश लाल शर्मा ने रुनकता के मत का समर्थन किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, मुंशीराम शर्मा आदि इनका जन्म-स्थान रुनकता ही मानते हैं।

मिश्र विनोद में मिश्रबन्धु ने सूर का जन्म स्थान मथुरा मान

क्रमशः –

B.A. I Part 4/12/20
Hindi Hons

डॉ० अरुणिमा कुमारी
(हिन्दी विभाग)
राज० इण्टर० कॉले०, जहानाबाद

(1)

क्रमशः —

का उल्लेख हुआ है। नागरीदास के नागरी समुच्चय में सूरदास विषयक पर्याप्त मसाला मिलता है किन्तु वह अनुश्रुतियों पर आधारित प्रतीत होता है। रघुराज सिंह ने रामरसिकावली में सूर पर विस्तार से लिखते हुए उन्हें जन्मान्ध माना है। मिश्रबन्धु विनोद में भी सूरदास पर प्रकाश डाला गया है पर उसमें भी अनुश्रुतियों को ही स्रोत पर सूर की जीवन [illegible] का सृजन करने का प्रयास किया है। सारांश यह है कि बाह्य साक्ष्य के आधार पर भी सूर के जीवन के बारे में स्पष्ट हम नहीं कह सकते क्योंकि इनमें अतिरंजित जीवन वर्णित या प्रमाण है। केवल दो ही बातें जो बाह्य साक्ष्य प्रमाणित होती हैं और वे बातें हैं एक तो सूर की जन्मान्धता और दूसरी उनके कवित्व शक्ति। तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथों की सहायता होने पर भी हमें निराश ही होना पड़ता है क्योंकि उसमें सूरदास को अपने पिता के साथ अकबर की सभा में आने जाने का उल्लेख किया है (आईन-ए-अकबरी में) जो विचार ठीक नहीं जँचता।

वार्ता साहित्य में सूरदास जी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला गया है पर उनके जन्म, स्थान, माता-पिता आदि के सम्बन्ध में उल्लेख नहीं है। इसमें तो हमें सूरदास के दर्शन एक स्वामी होते हैं जब वे आगरा मथुरा सड़क के बीच एक घाट पर रहा करते थे जहाँ उन्हें वल्लभाचार्य के दर्शन हुए। वार्ता के प्रारम्भ में लिखा है — "अब श्री आचार्य जी महाप्रभु के सेवक सूरदास गऊघाट पर रहते तिनकी वार्ता।" भाव प्रकाश में सूरदास के [illegible] का उल्लेख सूरदास के [illegible] सूरदास तथा [illegible] का मिलन, वल्लभाचार्य तथा [illegible] के बीच [illegible] सूरदास [illegible] विशेष उल्लेखनीय है।

अतः वार्ता के अतिरिक्त सूरदास के जीवन [illegible] सूर सारावली और साहित्य लहरी में [illegible] किया है। उन ग्रंथों में [illegible] सूरदास के कुछ आत्मविषयक कथन मिलते हैं, पर उन कथनों को प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है। [illegible] —

क्रमशः —